International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.6 July-Aug 2023

बासुदेव सुनानी की कविताओं में दलित स्त्री जीवन

गौरांग चरण राउत
शोधार्थी (हिन्दी विभाग), हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय
संपर्क-सूत्र- आरंभ टाउनशिप (राजीव स्वगृह), ED1, Flat No. 505,
चंदानगर, हैदराबाद-500019, तेलेंगाना
Corresponding Author – गौरांग चरण राउत
DOI- 10.5281/zenodo.8318573

समाज में स्त्री का महत्वपूर्ण स्थान है। स्त्री मानव समाज का निर्माण और विकास करती है। अतः सामाजिक दृष्टि से नारी की महत्ता स्वयंसिद्ध है। किन्तु इन सबके बावजूद भारतीय समाज में पुरूष का वर्चस्व रहा। नारी, पुरूष सत्तात्मक समाज में पुरूषों के हाथ में कठपुतली एवं भोग विलास का साधन मात्र बनकर रह गयी। उसकी निजी तथा सामाजिक स्थिति दयनीय हो गयी है। सामाजिक बंधनों में वह बुरी तरह जकड़ गई। समाज के सारे धर्म, नीति, नियम केवल नारी के लिए ही बने हैं। मनुस्मृति में नारी को नरक कहा गया है। उनके चरित्र पर आरोप लगाते हुए उन्हें हमेशा नीचा दिखाया जाता है। मनु स्त्री के बारे में कहता है "स्त्रियां बुद्धिमान नहीं होती वे दुर्बल, चंचल, पापी होती है, सिर्फ चूल्हा -चौका पति और घर के सब लोगों की सेवा करना उसका कर्तव्य और धर्म है।"[1] स्त्री को किसी भी प्रकार की स्वाधीनता देना मनु को मान्य नहीं था। समाज व्यवस्था के नियामक अन्यायी मनु ने नारी को सदैव पुरूष के पराधीन और उसका गुलाम बनाकर उस पर अनेकानेक प्रतिबंध लाद दी, उसे नरक के गर्त में धकेलने की पूरी साजिश मनु ने रची थी। अंबेडकर के शब्दों में "स्त्री के बारे में मनु के विधि-विधान विक्षप्तता के प्रमाण है, मनु ने कानून बनाते समय न्याय अन्याय को ताक पर रखा।"[2] पितृसत्तात्मक समाज में सदियों से स्त्री को मूलभूत अधिकारों से वंचित रखा गया। आज भी भारतीय नारी प्रभुत्ववादी पुरूष के चंगुल में फंसी हुई है। आज पूंजीवादी समाज में नारी केवल भोगविलास की सामग्री है, जिस पर पुरूष का पूर्ण अधिकार है।

ऐसी परिस्थिति में दलित नारी की स्थिति और दयनीय है। दलित नारी की समस्याएँ, सवर्ण नारियों की तुलना में कहीं ज्यादा है। विमल थोरात के शब्दों में "दलित महिलाओं की कुछ समस्याएँ ऐसी है जो आम महिलाओं की समस्याओं से अलग नहीं, किंतु दूसरी और कुछ समस्याएँ ऐसी है जो केवल उनकी ही है और इसलिए हैं क्योंकि वे दलित हैं।" [3]

जहां हमारे समाज में एक तरफ स्त्री को देवी का रूप मान कर पूजा की जाती है तो दूसरी ओर वही समाज ठाकुर, जमींदार, साहूकार के रूप में स्त्री का शोषण करता है। इस शोषण का ज्यादा शिकार दलित स्त्रियाँ होती हैं। वह दोहरे तिहरे शोषण का शिकार होती है। दलित स्त्री के ऊपर नारी होने का अभिशाप फिर उसके ऊपर दलित होने का अभिशाप अर्थात उसके ऊपर 'दोहरा अभिशाप' है। दलित बस्ती की स्त्रियाँ उपेक्षित ज़िंदगी जीती हैं। उनके पास न संपत्ति होती है, न शिक्षा होती है। हर दिन के रोटी के लिए उन्हें श्रम करना पड़ता है। दलित नारी को गरीबी हमेशा घेरी रहती है। इसी गरीबी के कारण वह मेहनत-मजदूरी करती है। दलित महिलाएँ कभी सवर्णों के घरों में तो कभी खेतों में रोजी-रोटी के लिए काम करती हुई दिखाई देती है। यहाँ तक कि दलित महिलाएँ दो पहर की कड़ी धूप में गाये, भैंस, बकरी आदि जानवरों को चराने का काम करती हैं। इसी दो पहरी में उनकी सोचनीय स्थिति को दर्शाते हुए कवि लिखते हैं-

[1] दलित उत्पीड़न की परंपरा और वर्तमान, मोहनदास नैमिशराय, पृ.सं-124
[2] दलित अस्मिता, जनवरी-जून 2012, पृ.सं-25
[3] दलित साहित्य का स्त्री वादी स्वर , विमल थोराट, पृ.सं- 94

"अगर मैं पुंछू
एक मौका देखकर
किसी के घर से गरम
किसी के घर से ठंडा
एक दो कटोरी
सढ़ी चावल पानी से क्या मिलता है
बारिश, ओस में भीगकर
धूप में सुख कर
ये बकरा चराने से क्या मिलता है ।"[4]

इस तरह दलित महिलाओं को एक जून का खाना जुटाने के लिए रात-दिन काम करना पड़ता है। पर उनकी इस लाचारी और विवशता को ये सवर्ण समाज के लोग नहीं समझ पाते हैं । समझेंगे भी कैसे? गरीबी, भूख का दर्द वह कैसे जानेंगे जो कभी गरीबी नहीं देखा, भूख के दर्द में कभी नहीं तड़पा। वे तो विलासपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं रोजी-रोटी या भूख की चिंता उन्हें नहीं है। उनकी चिंता गरीब दलित महिलाओं की चिंता से संपूर्ण अलग है कवि लिखते हैं

"एकाग्रता में दौड़ता
मुलायम पैरों
रक्तचाप, कोलेष्टेराल
मोटापा आदि समस्याओं
से ऐसे रहते है चिंतित
जैसे चिंतित रहती है एक स्त्री
अपनी दो भूखे बच्चों के लिए
दो वक्त रोटी
जुटाने में।"[5]

भूख और गरीबी के कारण दलित महिलाएँ विपरीत स्थितिओं में भी काम करने से नहीं डरती। यह उनकी मजबूरी है। गरीबी के साथ-साथ दलित स्त्रियाँ अनेक प्रकार के दमन का शिकार होती हैं। गाँव के सवर्ण लोग दलित महिलाओं का निरंतर अपने हवस का शिकार बनाते रहे हैं। अछूत लड़कियों का शोषण गांव के ठाकुरों के लिए आम बात है। ये लड़कियाँ मानो इनकी अय्याशी के लिए पैदा हुई हो। इनको गंदी गालियाँ देना सरे आम नंगा करके घुमाना, बलात्कार करना यह सब जैसे ठाकुरों की आदत बन गयी है। बात-बात पर गाली देना उनकी नियती बन गयी है। इन ठाकुर और जमींदारों की गलतियों की सजा भुगतनी पड़ती है दलित बहू-बेटियों को। इनके दुर्व्यवहार के कारण दलित बेटियों को अभिशप्त जीवन जीना पड़ता है। उनकी शादी ब्याह तक नहीं हो पाती। इस विवशता को वर्णन करते हुए कवि लिखते हैं

"एक दिन के लिए वह भूल गयी थी
सामान्य हवा में उजड़ा हुआ
झोंपड़ी का घर
कई दिनों से
बंद रही चूल्ला
किसी एक का हाथ लगा था
ढेमशा नृत्य के समय
उनकी बेटी सुपाली पर
जो अब तक
बिन ब्याहे
उम्र गिन रही है।"[6]

भारतीय धर्मशास्त्र, रीति-रिवाज और परंपरा के कारण दलित स्त्रियों का ऐसा शोषण होता है जिससे मानवीय संवेदना तिलमिला जाएगी। सवर्ण पुरूष केवल कामोत्तेजना की पूर्ति के उद्देश्य से दलित स्त्रियों का बलात्कार नहीं करते बल्कि उसके पीछे उनकी जातीय श्रेष्ठता और उच्चता का दंभ भी रहता है। विमल थोरात के शब्दों में "दलित महिलाओं और उन पर होनेवाले जुल्म-जोर, बलात्कार, अवमानना, उत्पीड़न की हजारों घटनाओं के पीछे उनका दलित होना बहुत बड़ी वजह है। क्योंकि उनके प्रति सवर्ण समाज की धारणा और व्यवहार आज भी ब्राह्मणवादी परंपरा से प्रभावित है।"[7] कवि सवाल करते हैं कि इन दलित महिलाओं के साथ ऐसा अमानवीय व्यवहार क्यों किया जाता है। यह भी तो भारत माँ की बेटी है। स्वतंत्रता दिवस एवं साधारणतंत्र दिवस में भारत माता की जयगान होती है, भारत माता को सम्मान दिया जाता है। दूसरी तरफ उसी दिन राज पथ पर दलित महिलाओं के साथ बलात्कार किया जाता है। उनके नंगे, भूखे बच्चों के साथ मार पीट की जाती है। यह सवर्णों का कैसा दोगला चरित्र है । कवि लिखते हैं

"गेट के पास सोई हुई वह नारी
भारत माता की प्रतीक
जमीन में गिरी हुई उसकी आंचल
तीन रंग में लहराती हुई झंडा
देश का गर्व और गौरव
और जो गिड़गिड़ाता हुआ बच्चा
अपनी माँ की आंचल खींच रहा है
वही है
भारत प्रगति का अग्रदूत।"[8]

[4] बांस अंकुर का बाजार, बासुदेव सुनानी पृ.सं- 2
[5] सायद प्रेम करना मुझे नहीं आता,बासुदेव सुनानी, पृ-सं- 87
[6] बांस अंकुर का बाजार, बासुदेव सुनानी पृ.सं-50
[7] दलित साहित्य का स्त्री वादी स्वर , विमल थोराट, पृ.सं- 107
[8] सायद प्रेम करना मुझे नहीं आता,बासुदेव सुनानी, पृ-सं- 86

भारतीय समाजिक परिवेश में दलित महिला एक महिला नहीं उपभोग की वस्तु मात्र बन गई है। उसका दुःख-दर्द, चीत्कार कोई नहीं सुनता है। न सामाजिक ठेकेदार, न राजनेता, न सरकार। सब मूक बन कर बैठे रहते हैं और दलित महिला दोहरा, तिहरा शोषण की शिकार होती जा रही है। नैमिशराय के शब्दों में "दलित महिलाओं की त्रासदी यह है कि उन्हें एक गालपर ब्राह्मणवाद का तो दूसरे गाल पर पितृसत्ता का थप्पड़ खाना पड़ता है।"[9]

बासुदेव सुनानी ने अपनी कविताओं में नारी की वास्तविक स्थिति का मार्मिक चित्रण किया है। क्या आज भी नारी का शोषण नहीं हो रहा है? नारी पर अत्याचार नहीं किए जा रहे हैं? नारी को मिले अधिकारों का उपयोग क्या वास्तव में नारी कर रही है? ऐसे अनेक सवालों का उत्तर बासुदेव सुनानी की कविताओं में मिलता है।

[9] आधुनिकता के आईने में दलित, अभय कुमार दुवे, पृ.सं- 230